

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2008

प्रश्न पत्र-IV

प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं।

भाग-I (दशा पद्धति)

1. शनि-शुक्र दशा के सामान्य फल पर चर्चा करें तत्पश्चात् यह बताएँ कि इस दशा में निम्न कुण्डली में क्या विशेष फल होंगे?
जन्म 14.12.1946, 9.24 बजे दिल्ली, दशा शेष : केतु 0व 5मा 1दि
लग्न - मकर 0:49, सूर्य - वृश्चिक 28:27, चन्द्र - सिंह 12:31
मंगल - धनु 4:25, बुध - वृश्चिक 8:19, बृहस्पति - तुला 23:53
शुक्र - तुला 24:40, शनि (व) - कर्क 15:16, राहु - वृषभ 17:52
राहु - वृषभ 17:52
2. उपरोक्त जातक का विवाह 29.9.1974 को सम्पन्न हुआ व मृत्यु जून 1980 में हुई। जिन दशाओं में घटनाएँ हो सकती हैं, वे दशाएँ ज्ञात करें व कारण सहित इन दशाओं में उक्त घटनाओं का ज्योतिषीय विवेचन करें।
3. किन्हीं 3 पर टिप्पणी लिखें :-
 - क) छिद्र दशा
 - ख) दशा फल जब दशा व अन्तरदशा 3-11, 6-8 व 7-7 हो
 - ग) ग्रह अवस्थाओं के परिणाम स्वरूप दशा फल
 - घ) वक्री ग्रहों का दशाफल
4. विशोत्तरी दशा पद्धति के मुख्य नियामक नियमों पर विचार प्रकट करें।
5. सत्य या असत्य बताएं :-
 - i) शुभ स्थिति में सूर्य महादशा मान व धन देती है।
 - ii) अशुभ स्थिति में चन्द्र महादशा दुख देती है।
 - iii) कर्क के बृहस्पति द्वारा दृष्ट मकर स्थित मंगल की दशा भूमि व धन प्रदान करेगी।
 - iv) अशुभ बुध की महादशा में जातक को विदेश विस्थापित करेगी।
 - v) अशुभ बृहस्पति की महादशा में मान वैभव प्राप्त होगा।
 - vi) शुभ केतु की दशा में क्रूर साधनों से धन प्राप्त होता है।
 - vii) नवम राहु की दशा में जातक तीर्थ यात्रा करता है।
 - viii) तुला का शनि अपनी दशा में जातक को गाँव या शहर का मुखिया बनाता है।
 - ix) अशुभ शुक्र की दशा में धन वैभव का अभाव रहता है।
 - x) चन्द्र व शनि की एक दूसरे की दशा/अन्तरदशा मानसिक व आर्थिक तंगी से सामना कराती है।

भाग-II (घटनाओं का समय निर्धारण व गोचर)

6. "कुण्डली का सामर्थ्य घण्टे की सुई के समान, दशा मिनट की सुई व गोचर सेकंड की सुई के समान होता है" इस कथन के मर्म को समझते हुए गोचर की महत्ता पर चर्चा करें।

या

पर्याय पद्धति का प्रयोग करते हुए गुरु के गोचर का जीवन काल में होने वाले प्रभावों पर चर्चा करें।

7. संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-

क. नक्षत्र वेध

ख. मूर्ति निर्णय

ग. गोचर फलादेश में लग्न का महत्त्व

घ. विपरीत वेध

8. नीचे एक महिला की कुण्डली दी गई है। अध्ययन कर यह ज्ञात करें कि वे कब मंत्री बनीं व उनका विवाह कब हुआ।

जन्म - 26.08.1956, 5 बजे प्रातः, दिल्ली, दशा शेष - केतु 6व 9मा 24दि

लग्न - कर्क 26:34, सूर्य - सिंह 9:26, चन्द्र - मेष 0:22

मंगल(व) - कुंभ 28:52, बुध - कन्या 6:04, गुरु - सिंह 16:44

शुक्र - मिथुन 23:45, शनि - वृश्चिक 3:27, राहु - वृश्चिक 10:66

9. दशा और अन्तरदशा में सम्भावित घटनाओं पर गोचर का क्या प्रभाव होता है? विवाह के संदर्भ में विस्तार से चर्चा करें।

10. अष्टकवर्ग की मदद से आप घटनाओं का समय किस प्रकार ज्ञात करते हैं? समझाए।